राय देवीप्रसाद जी का जन्म मार्गशीर्ष कृष्ण १३, संवत् १९२५ वि. को जबलपुर में हुआ था। इनके पिता का नाम राय वंशीधर था। वंशपरंपरागत 'राय' उपाधि इनके पूर्वजों का बादशाही शासनकाल में मिली थी। इनका पैत्रिक निवास कानपुर जिले की घाटमपुर तहसील के अंतर्गत भदरस ग्राम में था जो भूषण और मतिराम के सुप्रसिद्ध जन्मग्राम तिकवाँपुर के पास है। इन्होंने कलकत्ता विश्वविद्यालय की बी.ए. और बी.एल. परीक्षाएँ प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण कीं और कानपुर में वकालत करते रहे। अपने समय के ये बड़े ही सफल और सम्मानित वकील थे। इनका संस्कृत साहित्य का अध्ययन बड़ा व्यापक और गंभीर था। उर्दू-फारसी के भी ये अच्छे ज्ञाता थे।

सरकारी कानून का रखकर पूरा ध्यान।
कर सकते हो देश का सभी तरह कल्यान ।।
सभी तरह कल्यान, देश का कर सकते हो।
करके कुछ उद्योग, सोग सब हर सकते हो।
जो हो तुममें जान, आपदा भारी सारी।
हो सकती है दूर, नहीं बाधा सरकारी।।
****

थाली हो जो सामने भोजन से संपन्न।
बिना हिलाए हाथ के, जाय न मुख में अन्न।।
जाय न मुख में अन्न, बिना पुरुषार्थ न कुछ हो।
बिना तजे कुछ स्वार्थ, सिद्ध परमार्थ न कुछ हो ।
बरसो, गरजो नहीं, धीर की यही प्रणाली,
करो देश का कार्य, छोड़कर परसी थाली ।।
****

धन के होते सब मिले, बल, विद्या भरपूर।
धन से होते हैं सकल जग के संकट चूर।।
जग के संकट चूर, यथा कोल्हू में घानी।
धन है जन का प्राण, वृक्ष को जैसे पानी।
हे त्रिभुवन के धनी ! परमधन निर्धन जन के !
है भारत अति दीन, लीन दुख में बिन धन के।।
****

'पूरन'! भारततर्ष के, सेवाप्रेमी लोग।
कर सकते हैं दूर दुख, ठानें यदि उद्योग।
ठानें यदि उद्योग, कलह तजकर आपुस का।
नानाविध उपकार, तभी कर डालें उसका।
करता है निर्देश, जगत का स्वामी 'पूरन'।
करें सूजन उद्योग, कामना होगी पूरन।।
****

तन, मन, धन से देश का करें लोग उपकार।
विद्या, पौरुष नीति का, कर पूरा व्यवहार ।।
कर पूरा व्यवहार, धर्म का काम बनावें।
अग्रगण्य जन विहित प्रथा को चित्त में लावें ।
पृथक् पृथक् निज स्वार्थ भुलावें सच्चेपन से।
देश-लाभ को अधिक जानकर तन-मन-धन से।।
****

धन को सेवा जानिए सब सेवा का सार।
होता है तन, मन दिए, इस धन का संचार ।।
इस धन का संचार, धर्म ही के हित मानो।
बिना दान के सफल धनी-पद को मत जानो ।
पेट देश का भरो पेट का काट कलेवा।
यथाभक्ति दो दान,बनै तब धन की सेवा।।
****

सुनो बंधुवर ! 'पूर्ण' का सुन करुणामय नाद।
इन वचनों से ईश ने सब हर लिया विषाद ।।
सब हर लिया विषाद किया आश्वासन पूरा।
होगा पूरन काम, नहीं जो यत्न अधूरा।
उसी सीख अनुसार, लेखनी कर में लेकर।
करता हूं विस्तार-कथन, टुक सुनो बंधुवर ।।
****

पुर्जे किसी मशीन के हों कहने को साठ।
बिगड़े उनमें एक तो, हो सब बाराबाट।।
हो सब बाराबाट, बन्द हो चलना कल का।
छोटा हो या बड़ा, किसी को कहो न हलका ।
है यह देश मशीन, लोग सब दर्जे दर्जे।
चलें मेल के साथ उड़े क्यों पुर्जे-पुर्जे ।।
****

पानी पीना देश का, खाना देशी अन्न।
निर्मल देशी रुधिर से, नस-नस हो संपन्न ।।
नस-नस हो संपन्न, तुम्हारी उसी रुधिर से।
हृदय, यकृत, सर्वांग, नखों तक लेकर शिर से ।
यदि न देशहित किया, कहेंगे सब 'अभिमानी' ।
शुद्ध नहीं तब रक्त, नहीं तुझमें कुछ 'पानी' ।।
****

सपना हो तो देश के हित ही का हो, मित्र !
गाना हो तो देश के हित का गीत पवित्र ।।
हित का गीत पवित्र, प्रेम-वानी से गाओ।
रोना हो तो देश-हेतु ही अश्रु बहाओ।
देश-देश ! हा देश ! समझ बेगाना अपना।
रहे झोपड़ी बीच, महल का देखें सपना ।।
****